भारतीय दर्शन में ईश्वर - विचार
(The Concept of God in Indian Philosophy)

भारतीय दर्शन में ईश्वर का महत्वपूर्ण स्थान है। इसका कारण यह है कि भारतीय दर्शन पर धर्म की अमिट छाप है। ईश्वर में विश्वास को ही साधारणतया धर्म कहा जाता है। अब हम भारतीय दर्शन में वर्णित ईश्वर सम्बन्धी विचार की व्याख्या करेंगे।

भारतीय दर्शन का प्रारम्भ वेद से होता है। वेद-दर्शन में अनेक देवताओं के विचार निहित है। वैदिक काल के ऋषियों ने अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, उषा, पृथ्वी, मरुत, वायु, वरुण, इन्द्र, सोम आदि देवताओं का आराधना का विषय माना है। वेद में अनेकेश्वरवाद के उदाहरण मिलते है। अनेकेश्वरवाद का अर्थ अनेक ईश्वर में विश्वास है।

देवताओं की संख्या अनेक होने के कारण लोगो के सामने यह प्रश्न उठता है कि इन देवताओं में किस देवता को श्रेष्ठ मानकर आराधना किया जाय? वैदिक काल में उपासना के समय अनेक देवताओं में कोई एक ही जो उपास्य बना है सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। प्रो० मैक्समूलर ने वैदिक धर्म को

Congratulations! Take pride. You are using a Navneet ecobuddy™ product.

हीनोथीजम (Henotheism) कहा है। इसे 'अवसरवादी एकेश्वरवाद' भी कहा जाता है। इसके अनुसार उपासना के समय एक देवता को सबसे बड़ा देवता माना जाता है। हीनोथीजम (Hinotheism) का रूपान्तर एकेश्वरवाद (Monotheism) में हो जाता है। इसके अनुसार विभिन्न देवता एक ही ईश्वर के अलग-अलग नाम है। अतः वेद में अनेकेश्वरवाद, हीनोथीजम तथा एकेश्वरवाद के उदाहरण मिलते है।

वेद के पश्चात् उपनिषद् दर्शन में ईश्वर का स्थान गौण प्रतीत होता है। उपनिषद् में ब्रह्म को परम तत्व के रूप में स्वीकार गया है। उपनिषद्-दर्शन में ब्रह्म एवं आत्मा का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है।

उपनिषदों में ब्रह्म के दो रूपों का वर्णन मिलता है - (1) पर ब्रह्म (2) अपर-ब्रह्म। पर-ब्रह्म को ब्रह्म (Absolute) तथा अपर-ब्रह्म को ईश्वर (God) कहा गया है। पर-ब्रह्म असीम, निर्गुण, निष्प्रपन्च है। अपर-ब्रह्म इसके विपरीत, सीमित, सगुण तथा सप्रपन्च है। उपनिषदों में ईश्वर को विश्वव्यापी (immanent) तथा विश्वातीत (transcendent) दोनों माना गया है।

उपनिषद् के ईश्वर विचार को जान लेने के बाद भगवद्गीता के ईश्वर विचार

Congratulations! Take pride. You are using a Navneet ecobuddy™ product.

की जानकारी आवश्यक है। गीता में विशेष रूप से 'विश्व रूप दर्शन' नामक अध्याय में सर्वेश्वरवाद का चित्र मिलता है। ईश्वर को, अक्षर, परमज्ञानी, जगत का परम निधान तथा सनातन पुरुष कहा गया है। ईश्वर विश्व में पूर्णतः व्याप्त है। जिस प्रकार दूध में उज्ज्वलता व्याप्त है, उसी प्रकार ईश्वर विश्व में निहित है। ईश्वरवाद को गीता का केन्द्र बिन्दु माना गया है।

गीता में ईश्वर को 'पुरुषोत्तम' कहा गया है। वह परम-ब्रह्म है। ईश्वर को प्रकृति और पुरुष से परे माना गया है।

गीता के पश्चात् भारतीय दर्शन की रूपरेखा में परिवर्तन होता है। दर्शन का विभाजन आस्तिक तथा नास्तिक वर्गों में होता है। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त आस्तिक दर्शन तथा चार्वाक, जैन, बौद्ध नास्तिक दर्शन के वर्गों में रखे गये हैं।

सर्वप्रथम नास्तिक-दर्शनों को ईश्वर सम्बन्धी विचार जानना आवश्यक है। चार्वाक-दर्शन में ईश्वर का कोई स्थान नहीं है। चार्वाक प्रत्यक्ष को ही ज्ञान का एकमात्र साधन मानता है।

Congratulations! Take pride. You are using a Navneet ecobuddy™ product.

चूंकि ईश्वर का कोई प्रत्यक्षीकरण नहीं होता है इसलिए चार्वाक ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करता है। अतः चार्वाक अनीश्वरवाद का जोरदार समर्थन करता है।

बौद्ध-दर्शन और जैन-दर्शन में सैद्धान्तिक रूप से अनीश्वरवाद को अपनाया गया है। दोनों दर्शनों में ईश्वर के अस्तित्व का निषेध हुआ है। बौद्ध के अनुसार ईश्वर को विश्व का कारण मानना भ्रामक है। संसार प्रतीत्यसमुत्पाद के नियम से संचालित होता है। बुद्ध ने 'आत्मदीपो भव' का उपदेश देकर शिष्यों को आत्म-निर्भर रहने को प्रोत्साहित किया।

जैन-दर्शन में भी अनीश्वरवाद पर बल दिया गया है। जैन-दर्शन के अनुसार ईश्वर को विश्व का स्रष्टा नहीं मानना भ्रान्तिमूलक है। साधारणतः चेतन प्राणी जो भी करता है वह या तो स्वार्थ से प्रेरित होता है या दूसरों पर करुणा के कारण करता है। अतः ईश्वर को भी स्वार्थ या करुणा से प्रेरित होना चाहिए। जबकि ऐसा नहीं हो सकता है इसलिए ईश्वर को विश्व का निर्माता नहीं कहा जा सकता है।

पुनः व्यवहारिक रूप में बौद्ध और जैन दर्शन में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार गया है।

Congratulations! Take pride. You are using a Navneet ecobuddy™ product.

आगे चलकर बौद्ध दर्शन दो भागों में बंट गया है। महायान धर्म और हीनयान धर्म। महायान धर्म में बुद्ध के मृत्यु के पश्चात उन्हें ही ईश्वर मान लिया गया। हीनयान धर्म अनीश्वरवादी धर्म होने के कारण लोकप्रिय नहीं हो सका। इसी प्रकार जैन दर्शन में परोक्ष रूप से ईश्वर के अस्तित्व को माना गया है। जैन दर्शन में ईश्वर के स्थान तीर्थङ्करों को माना गया है।

न्याय-दर्शन में ईश्वर के अस्तित्व पर बल दिया गया है। ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए न्याय-दर्शन में निम्नलिखित युक्तियों का आश्रय लिया गया है —

(1) कारणाश्रित तर्क (Casual Proof) :- जगत् एक कार्य है। प्रत्येक कार्य का कोई चेतन कर्ता होना चाहिए। ईश्वर ही जगत का चेतन कर्ता है।

(2) जीवात्मा शुभ और अशुभ कर्मों के द्वारा धर्म तथा अधर्म को अर्जन करते हैं। ईश्वर ही धर्म तथा अधर्म का अधिष्ठाता है। वह जीवात्मा को उनके धर्म तथा अधर्म के अनुरूप सुख एवं दुःख का वितरण करता है।

(3) वेद एक प्रामाणिक रचना है। वेद की प्रामाणिकता का कारण

Congratulations! Take pride. You are using a Navneet ecobuddy™ product.

यह है कि वेद की रचना ईश्वर ने की है।

(८)

वैशेषिक भी ईश्वरवाद का समर्थक है। वैशेषिक ने ईश्वर को एक आत्मा कहा है जो चैतन्य से युक्त हो वैशेषिक के अनुसार आत्मा दो प्रकार की होती है — (1) जीवात्मा (2) परमात्मा। परमात्मा को ईश्वर कहा जाता है।

सांख्य दर्शन में ईश्वर को लेकर कुछ वाद-विवाद है। अधिकांश टीकाकारों ने सांख्य को ~~नि~~ ~~///~~ निरीश्वरवादी (Atheistic) ही माना है। ईश्वर के अस्तित्व के विरुद्ध सांख्य ने अनेक युक्तियाँ दी है जो निम्न है —

(1) संसार कार्य-शृंखला है। अतः इसका कारण भी अवश्य होना चाहिए परन्तु ईश्वर को विश्व का कारण नहीं माना जा सकता क्योंकि वह नित्य और अपरिवर्तनशील है।

(11) यदि ईश्वर की सत्ता को माना जाये तो जीवों की स्वतन्त्रता तथा अमरता खंडित हो जाती है। जीवों को ईश्वर का अंश नहीं कहा जा सकता क्योंकि उनमें ईश्वरीय शक्ति का अभाव है।

Congratulations! Take pride. You are using a Navneet ecobuddy™ product.

मीमांसा-दर्शन में ईश्वर को अत्यन्त ही तुच्छ स्थान प्रदान किया गया है। संसार की सृष्टि के लिए स्वर्ग और अपवर्ग का पुरस्कार तथा दण्ड देने के लिये ईश्वर को मानना आवश्यक है। शंकर के अद्वैत वेदान्त में ईश्वर को व्यावहारिक दृष्टि से सत्य माना गया है। परन्तु वह पारमार्थिक दृष्टि से सत्य नहीं है। शंकर एक मात्र ब्रह्म को ही पारमार्थिक दृष्टि से सत्य मानता है।

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
V.K.S.U, Ara, Bhojpur.